उच्च शिक्षा में नवाचार :उपादेयता एवं महत्व

डॉ0 जितेन्द्र सिंह गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग
भारतीय महाविद्यालय, फर्रुखाबाद (उ0प्र0)

शोध–सार

भारत में, जहां संसाधन दुर्लभ हैं, उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करना लोकतंत्र की सफलता के लिए एक प्रमुख प्राथमिकता होनी चाहिए। प्रासंगिकता, लागत, समानता और अंतरराष्ट्रीय मानकों के मुद्दों को ध्यान में रखते हुए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की चिंता किया जाना जरुरी है। उच्च शिक्षा जीवन के सभी क्षेत्रों में मानव संसाधन की आपूर्ति करती है किसी देश की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति और आर्थिक विकास उच्च शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। कृषि, खाद्य सुरक्षा और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में स्वदेशी तकनीक और क्षमताओं का विकास विश्व स्तरीय उच्च शिक्षा की मदद से ही संभव हो सकता है। रोजमर्रा की चुनौतियों के कारण विश्व तेज गति से आगे बढ़ रह है और वैश्विक शैक्षिक चुनौतियों के अनुकूल होने में मदद करने के लिए शिक्षा क्षेत्र को फिर से जीवंत करने की तत्काल आवश्यकता है। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली किसके कारण लगातार परिवर्तन और उतार–चढ़ाव की स्थिति में है? उच्च शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने की बढ़ती जरूरतों, शिक्षा पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव, निजी भागीदारी में वृद्धि और वैश्वीकरण का प्रभाव, शैक्षिक और प्रशासनिक दोनों में हाई–टेक नवाचारों का उपयोग यह दर्शाता है कि हमारी शिक्षा प्रणाली अभी भी नई तकनीक के साथ सामंजस्य नहीं बैठा पा रही है ऐसे समय में जब हमारे शिक्षण संस्थानों से कम संसाधनों के साथ अधिक बेहतर प्रदर्शन करने की उम्मीद की जाती है, उन्हें आसानी से उपलब्ध तकनीकी नवाचारों का उचित उपयोग करना चाहिए। समाज में उच्च शिक्षा की भूमिकाऔर सभी तक उच्च शिक्षा की पहुच को सभी वर्गों को सुनिश्चित करने हेतु यह महत्वपूर्ण है कि उच्च शिक्षा में अधिक से अधिक नवाचारों का प्रयोग और प्रोत्साहित किया जाये।

संकेत शब्द–*उच्च शिक्षा, गुणवत्ता, नवाचार।*

प्रस्तावना :–

मानव संसाधन विकसित करने के लिए कई देश शिक्षा सुधार में लगे हुए है अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी बने रहें। इनमें से कई सुधारों में एक कीवर्ड नवाचार है। तथापि, शिक्षा में नवाचार के कई अर्थ प्रतीत होते हैं। कभी–कभी, यह शिक्षा की आवश्यकता को संदर्भित करता है कभी–कभी, यह नए उत्पादों, प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है। शिक्षा में नवाचार के कई आधुनिक उदाहरण दुनिया भर में मौजूद हैं जिसे 21 वीं सदी की दक्षताओं में देखा जा सकता है, जो शिक्षार्थियों को महत्वपूर्ण ज्ञान और कौशल प्रदान करता है। शिक्षा में नवाचार के मुद्दों में जटिल और बहु–सामना करने वाली चुनौतियां शामिल हैं जैसे कि शिक्षा नीतियां, पाठ्यक्रम सुधार, नई विविधता–उन्मुख सीखने की तकनीक और विधियां। इसके अलावा, जिस चुनौती का सामना करना पड़ता है वह हर देश में और प्रत्येक देश में स्कूल से स्कूल में भिन्न हो सकती है। इसलिए, चुनौती में शिक्षा नवाचार की विशिष्ट प्रकृति, शिक्षक और छात्र प्रोफ़ाइल में स्थित संदर्भ, देश या क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्थानीय आदतों, जरूरतों और प्रथाओं, नैतिकता को ध्यान में रखना होगा। और यहां तक कि धार्मिक विश्वास भी। 21 वीं सदी में इंटरनेट शैक्षणिक इंफ्रास्ट्रक्चर विकास की दिशा में नया आयाम है. कोरोना वायरस की महामारी के बाद ये तय भी हो चुका है कि इंटरनेट सूचनाओं का ही नहीं, भविष्य में शिक्षा का भी इंजन बन सकता है. वर्तमान सरकार 'स्वयं' (SWAYAM) और

'दीक्षा' (DIKSHA) जैसे कार्यक्रमों के डिजिटल संसाधनों के विकास की दिशा में प्रयासरत है. 'स्वयं' एक ऐसा ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म है, जिसे मुख्य रूप से भारतवासियों के लिए तैयार किया है. इसके जरिए कोई भी व्यक्ति, कहीं से भी उच्चत गुणवत्ता के शैक्षणिक संसाधनों तक आसानी से पहुंच सकता है. और डिग्री भी पाई जा सकती है. देश के कई विश्वविद्यालय 'स्वयं' के तहत डिग्री प्रदान करते हैं. वर्तमान में 'स्वयं' के अतंर्गत 4084 कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं. दीक्षा' का लक्ष्य 'एक राष्ट्र, एक पोर्टल' के तहत एन0सी0ई0आर0टी0 और सी0बी0एस0ई0 सहित सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बोर्डों के ई–कंटेट को इंटरनेट पर उपलब्ध कराना है. फिलहाल 15 भाषाओं के 95000 ई–कंटेट इंटरनेट पर उपलब्ध हो चुके हैं। अध्यापन और शोध इंफ्रस्ट्रक्चर विकास के अन्ये महत्वपूर्ण पाये हैं. पिछले साल स्कूल अध्यापकों के एकीकृत प्रशि क्षण के लिए पिछले वर्ष 'निष्ठा' कार्यक्रम लांच किया था. इस कार्यक्रम का लक्ष्य 42 लाख शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों को प्रशिक्षित करना है, और अब तक 15 लाख से ज्यादा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है.

उच्च शिक्षा में नवाचारः–

अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए लांच किया गया 'पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड ट्रेनिंग' भी एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है. इस कार्यक्रम के तहत स्कूल और कॉलेज, दोनों ही स्तरों पर अध्यापकों को प्रशिंक्षित किया जाता है, और अब तक विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्था्नों के 95 लाख अध्यापक प्रशिक्षित हो चुके हैं. इनके अतिरिक्त लीप (LEAP)और अर्पित (ARPIT) भी ऐसे कार्यक्रम हैं, जिनके तहत उच्चर शैक्षणक संस्थानों के अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है. शोध की गुणवत्ता बेहतर करने और त्तिीय सहायता उपलब्ध कराने की प्रक्रिया सरल करने के लिए सरकार ने इम्प्रेस (IMPRESS) और इम्प्रिंरट (IMPRINT) जैसे कार्यक्रम आरंभ किए हैं. जबकि इम्प्रिंट का लक्ष्य ज्ञान को व्यवहार्य तकनीकी में बदलना है और इसके तहत 10 ज्ञानक्षेत्रों में 319 परियोजनाओं पर कार्य हो रहा है. सरकार की मंशा है कि इन नवाचारों के जरिए विश्वविद्यालयों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाए.शिक्षा में नया चलन है उभर रहा एक ई लर्निंग, जिसका मुख्य उद्देश्य है सिखाना और सीखना। इस उद्देश्य के लिए इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों और सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किया जाता है। ई लर्निंग, प्रमुख लाभ दूरियों को कवर करने की क्षमता में निहित है। यह विशेष तकनीक दुनिया भर में हर विश्वविद्यालय में पर पहुंचती है, विशेषकर वहां कि जहां पारंपरिक प्रशिक्षण एक बाधा बन जाता है।

मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स को उच्च शिक्षा का भविष्य कहा जा सकता है पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स भारत या विदेश में उच्च शिक्षा को कैसे प्रभावित करेगा लेकिन, मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स के आगमन के साथ, विश्वविद्यालयों का चेहरा और, उच्च शिक्षा बदल जाएगी। उच्च गुणवत्ता वाली सत्यापित सामग्री शिक्षकों के साथ–साथ छात्रों के लिए भी स्वतंत्र रूप से उपलब्ध होगी। शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों को बदलना होगा क्योंकि छात्र मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स की अधिक मांग करेंगे। अनिवार्य रूप से सामाजिक और सहयोगात्मक वातावरण का उदय होगा, जिससे उच्च शिक्षा के स्तर में सुधार होगा।

मोबाइल लर्निंग ने तो कोरोना काल में उच्च शिक्षा के परिद्रश्य को बदल दिया है मोबाइल एप्लिकेशन, टूल या सॉफ़्टवेयर दृ ष्टिकोण स्मार्टफोन, टैबलेट आदि जैसे उपकरणों द्वारा इसके अंतर्गत आते हैं। मोबाइल प्रौद्योगिकियों के आगमन और उपयोग ने ब्रिंग योर ओन डिवाइस (बीओओडी) की अवधारणा को जन्म दिया है। स्मार्टफोन और टैबलेट जैसे उपकरण नवाचार को सक्षम बनाते हैं और छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को डिजिटल सामग्री तक पहुंच प्राप्त करने में मदद करते हैं। यह सीखने को सक्षम, सशक्त करता है जिससे स्कूल

के अंदर और बाहर के छात्रों के लिए सीखने का माहौल बदल जाता है। मोबाइल उपकरणों के गुणों में से एक 24X7व्यक्तिगत डिजिटल सामग्री प्रदान करने की क्षमता है। भारत में, पिछले दशक के दौरान मोबाइल उपकरणों और सेलुलर कनेक्टिविटी में कई गुना वृद्धि हुई है, कोरोना काल में तो आशातीत वृद्धि हुई है और यह वृद्धि अभी भी जारी है

उच्च शिक्षा में नवाचार का महत्व

सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा जीवन के सभी क्षेत्रों में आने वाली प्रवृत्तियों के साथ तालमेल बिठाने के लिए ज्ञान के प्रसार के तरीकों में बदलाव लाने की आवश्यकता है। इसलिए, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित संसाधनों को शैक्षिक प्रणालियों में शामिल करने की आवश्यकता है ताकि छात्रों को आईसीटी उपकरणों और नयी तकनीकों सेपरिचित और उन्हें प्रयोग करने हेतु दक्ष बनाया जा सके। हालांकि, शैक्षिक संसाधनों के रूप में, मुद्रित ग्रंथ थे और अभी भी हैं सस्ती उपलब्धता के साथ–साथ दुनिया भर में लोकप्रियता के मामले में सबसे अधिक सुलभ, शिक्षा में आईसीटी का उपयोगकरके शिक्षण अधिगम को और अधिक रोचक बनाया जा सकता है और अक्सर यह कुछ प्रशिक्षकों और छात्रों के लिए कुछ तनाव पैदा करता है। लेकिन दुनिया तेजी से डिजिटल मीडिया और सूचना में आगे बढ़ रही है, शिक्षण सीखने में आईसीटी अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही हैं और यह महत्व 21 वीं सदी में बढ़ता और विकसित होता रहेगा।

राष्ट्रीय उच्च शिक्षा नीति–2020 ने उच्च शिक्षा क्षेत्र के पूर्ण पुनरुद्धार का आह्वाहन किया है। तथा शिक्षा में सुधार की दिशा में मिलकर काम करना होगा। उच्च शिक्षा के सभी हितधारकों का समन्वय और सहयोग भविष्य में विकास के लिये महत्वपूर्ण होगा। इस प्रक्रिया को तेजी से आरम्भ करने के लिये उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश के शिक्षकों द्वारा तैयार किये गये ई–कन्टेंट को एक स्थान पर उपलब्ध कराने के लिये एक पोर्टल विकसित किया है, जो सार्वभौमिक रुप से सभी छात्रों को निःशुल्क उपलब्ध है, इसे उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा डिजिटल लाइब्रेरी के नाम से जाना जाता है, यह द्विभाषी पोर्टल शिक्षक दिवस पर शुरु किया गया है। प्रदेश सरकार ने सितम्बर–अक्टूबर को विद्यादान माह के रूप में घोषित किया है और शिक्षकों से इस पुस्तकालय में योगदान देने की अपील की है, जो हमारी संस्कृति की प्रमुख विशेषता दान के अनुरूप है। इस डिजिटल लाइब्रेरी पर दो माह में प्रदेश के शिक्षकों द्वारा स्वैच्छिक रूप से लगभग 65000 ई–कन्टेंट अपलोड किये गए और तदुपरान्त निरन्तर अपलोड किए जा रहे है।

निष्कर्ष

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए वर्तमान क्षेत्र कठिन होने जा रहा है क्योंकि सरकार शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन और मानकों के लिए उच्च शिक्षा प्रणाली का वैश्वीकरण करने के बारे में सोच रही है। यह मौजूदा मानकों पर एक गंभीर सवाल खड़ा करेगा कि भारतीय विश्वविद्यालय और संस्थान इस क्षेत्र में वैश्विक चुनौतियों का कितनी अच्छी तरह सामना कर रहे हैं। कुछ लोगों को लगता है कि शिक्षा के वैश्वीकरण से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा मिलेगा जो वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने और रोजगार पाने में उत्कृष्टता के अवसरों का पता लगाने में सक्षम होगा। आज हम उच्च दर पर स्नातक पैदा कर रहे हैं लेकिन फिर भी उनमें से बहुत से बेरोजगार हैं, हमें इस मानसिकता को बदलने और रोजगार देने और रोजगार बढ़ाने के लिए उपयुक्त प्रयास करके इसे बदलने की जरूरत है। तो यह उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के लिए परिवर्तन, अनुकूलन परिवर्तन का समय है। हम समझते हैं कि वर्तमान उच्च शिक्षा चौराहे पर है और इसे सही रास्ते पर वापस लाने की जरूरत है ताकि यह देश के छात्रों के लिए आशा की किरण बन सके। शिक्षाविदों और प्रशासकों को वांछित परिवर्तन लाने के लिए अपनाई जाने वाली गंभीर पहलों पर विचार करना होगा। समाज की

अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम और सम्पूर्ण तंत्रकीओवरहालिंगएवंसमय–समय पर पुनर्गठित और अद्यतन किया जाने की अनिवार्य आवश्यकताहै। यद्यपि उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या में वृद्धि के मामले में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, अर्थात 523 विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय महत्व वाले डीम्ड विश्वविद्यालय और संस्थान भारत में काम कर रहे हैं, लेकिन भारत से एक भी उच्च शिक्षण संस्थान शीर्ष 200 संस्थानों में शामिल नहीं है। विश्व में, यह देश में अपनाई जा रही शिक्षा प्रणाली पर गंभीर प्रश्न खड़ा करता है जिसका उत्तर उच्च शिक्षण संस्थानों में नवीन परिवर्तनों को अपनाकर ही दिया जा सकता है। इस प्रकार शुरू किए गए ठोस प्रयास इस क्षेत्र से वांछित गुणवत्ता परिणाम ला सकते हैं।बदलते वैश्विक परिदृश्य में नवाचार के लिए "आउट–ऑफ–द–बॉक्स" सोच की आवश्यकता होती है छात्रों को आधुनिक शिक्षाशास्त्र और शैक्षिक सामग्री और पाठ्यचर्या के कई स्रोतों के साथ सीखने का ऐसा माहौल होना चाहिए जो इंटरैक्टिव और आकर्षक हो और जहाँ प्रभावी ढंग से तकनीक का प्रयोग किया जा सके शिक्षकों को सुगमकर्ता की भूमिका ग्रहण करने और शिक्षार्थियों को अपनी सीखने की प्रक्रिया को अनवरत जारी रखने और तेजी से बढ़ती डिजिटल दुनिया में अपने आप को अधतन रखने की आवश्यकता है नवाचार से उच्च शिक्षा में क्या फर्क पड़ सकता है। यह भविष्य के गर्त में हैयह भारत और विश्व में उच्च शिक्षा में सुधारों के लिए आशा की एक किरण ळें

सन्दर्भ सूची :–

1. गुप्ता, एस. पी. (2005)*शिक्षा का ताना–बाना*, इलाहाबाद :शारदा पुस्तक भवन
2. उमेश कुमार एवं सरिता (2010) भारत में उच्च शिक्षा–दशा एवं चुनौतियाँ, सामान्य ज्ञान दर्पण, पृष्ठ–43 अंक–1
3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (2020), *राष्ट्रीय शिक्षा नीति.*Retrieved fromhttps://www.education.gov.in/en
4. http://rojgarsamachar.gov.in/NewRS/MoreContentNew.aspx?n=SpecialContent&k=30254